# बुलावा/घोसना

# लोकविद्या जन-आंदोलन

**(पहिला अंतर्राष्ट्रीय अधिवेसन : 12-14 नवंबर, 2011, वाराणसी, भारत)**

विद्या आश्रम आप लोगन के 12-14 नवंबर, 2011 के बीचे होवय वाले लोकविद्या जन-आंदोलन के पहिले अंतरराष्ट्रीय अधिवेसन में सामिल होवे खातिर न्यौता देत हव। ई अधिवेसन बनारस में विद्या आश्रम के सारनाथ वाले मैदान (परिसर) में होई।

**जन-आंदोलन अउर ग्यान क नजरिया :**

विस्थापन आज भारत में सामाजिक आंदोलनन क बड़हर कारन हो गयल हव। जमीन, घर, रोजगार, संसाधन अउर बजार सभै जगह से मनुष के उजारल जात हव। किसान लोगन क आंदोलन खासतौर से खेती के ऊपज क उचित दाम पावै खातिर, कर्जा अउर बिजली खातिर, आ जबरी होये वाले जमीन छिनैती-कब्जा के खिलाफ होतै रहल हव। बनवासियन अउर स्थानीय समाजन क आंदोलन घर, जमीन, जंगल से बेदखली अऊर परयावरण के बिनास के खिलाफ चलतै रहल हव। सहरी गरीबन आ झोपड़पट्टी क रहवासियन क लड़ाई विस्थापन (उजाड़) के विरोध में अउर सामान्य नागरिक आ सामाजिक हक, मान-इज्जत के हासिल करै बदे हमेशा से होते रहल हव। बैसविक बाजार आ बड़ पूंजी स्थानीय बाजार में आपन घुसपैठ बनाके ओके तहस-नहस कइ दिहलस, एकरे खिलाफत में कारीगर आ ठेला-गुमटी पर धंधा करै वाले लोगन आपस में भारी पैमाने पर लामबंद होतै रहलन हं। एहर कुछ समय से ई कुल्हि आंदोलन मिल के विस्थापन के विरोध में एक बड़ा भारी-चौतरफा आंदोलन बनल चाहत हव। एक ओरी सासन-प्रसासन क नवकी व्यवस्था इ प्रतरोध के दल-बल से दबावे चाहत हव त दूसर ओरी लोगन के संगे ठाढ़ि भइल सामाजिक कारकर्ता एक नया किसिम क एकता बनावै चाहत हउअन आ ओकरे के एक रूप (आकार) देवे क रस्ता खोजत हउऊन।

विस्थापन क शिकार भइल इ कुल्हि जने अउर समाज कब्बौं कालेज नाहीं गइलन। आपन जिनगी लोकविद्या के भरोसे पर चलावेलन। उनहन लोगन क उहे आपन ग्यान लोकविद्या हव, जवन उनके पुरखन से विरासत में मिलल रहल हव, काज के जगह, समाज में आ साथ काम करे वाले संगी से सिखलन अउर ओके ऊंलोगन अपने जरूरत, अनुभव के हिसाब से प्रयोग कइलन, आपन बुद्धि-बहस से ओके समय के अनुकूल महारत वाला बनवलन। विस्थापन उनहन लोगन के जिनगी के ढांचा में अइसन बदलाव ली आयल की ओकरे चलते उनहन लोगन लोकविद्या यानी की अपनहीं ग्यान के इस्तेमाल से वंचित हो गइलन अउर बाजार में सस्ता मजदूर बनाके ऊ ग्यानी लोगन के खड़ा कर दिहल गयल। लोकविद्याधर समाज क लोकविद्या से रिस्ता तोरै वाले ई परकिरिया (प्रक्रिया) क मुकाबला हर हालत में करब जरूरी हव। असल बात ई हव की लोकविद्या यानी लोगन के सोचै क तरीका, उनकर मूल्य, उनकर संगठन क तरीका, उनहन लोगन क हुनर, ग्यान, सौंदर्य बोध अउर नैतिक संवेदना, ई कुल मिलके उनहन लोगन के ग्यान क दुनिया ही उनहन लोगन के सक्ति क प्रमुख स्रोत हव। भारत में अउर सगरों दुनिया में बिखरल किसानन,

आदिवासियन, कारीगरन, छोट-छोट धंधा करै वालन अऊर तरह-तरह के समाजन के बीच जदि कुछौ समान हव त ऊ लोकविद्या ही हव। इहै इ लोगन के बीचि एकता क कड़ी बा। ई समुझब जरूरी हव की आज मुक्ति क रस्ता ग्यान के दुनिया से होके गुजरत हव। लोकविद्या नजरिया सूचना जुग क जनता का नजरिया हव।

**लोकविद्या क दावा :** दुनिया भर में किसान अउर आदिवासी एक नया दावा पेश करत हउऊन। अपने-अपने भाषा में अउर अपने-अपने तरीका से ऊ लोगन ई कहत हउऊन की आपन ग्यान, मूल्य अउर बिस्वास के साथ जिअबउ अउर ऊ कुल्हि ग्यान पाइब जवन हम सभै जने चाहत हईं। ई हम सभै जन क जनम सिद्ध अधिकार हव। एके हमसे छीनल नाही जाय सकत। एसिया, अफरिका अऊर दक्खिनी अमरिका में नवा किसिम क हलचल देखात हव, जवने में सगरों संसार क सोषित, उतपीड़ित अऊर विस्थापित लोगन क येक नवा एकता क सनेस हव। एदा पारी ई एकता क अधार लोकविद्या में होय के हव यानी उनकरे आस-पास क समाजन अउर परकिरिती (प्रकृति) क उनकर समुझ में जवनं मेल खात हव, ओही में होइ।

एकर मतलब ई भयल की किसानन अऊर आदिवासियन, कारीगरन अउर मेहरारूअन अउरी छोट-छोट धंधा करै वालन, अउर मजदूरन लोगन के लोकविद्या क दावा पेस करै के चाही। ई खाली जीये खातिर कमाये क दावा भर नाहीं हव, ई येक नवा दुनिया बनावै क दावा हव। उनहन लोगन ई दावा पेस करिहन की पूंजी अउर ग्यान के व्यवसायीकरन क चुनौती मूल रूप से खाली लोकविद्या ही दे सकै ले। उनहन लोगन के इही दावा पेस करै के होई की सत् आ सामाजिक अउर आरथिक बराबरी क समाज क ग्यान क अधार सिरिफ लोकविद्या में हव। हम लोगन के ई समुझै के होई की जब तलक ई दावा नाहीं पेस होई तब तलक हम लोगन बुनियादी सामाजिक बदलावे के अपने ही बेअसर पूरवाग्रह में फंसल रहल जाई। एक तरह क लोकविद्या-ग्यान क दावा हम लोगन के बीचार और काम में एक नवा अऊर सच्चा उड़ान भर सकेला। जवन आरथिक, सामाजिक, राजनीतिक अऊर सांसकिरितिक, कुल्हि दिसा में नवा-नवा विचार (सोच) के जनम देही। अइसने दावा के रूप (अकार) देवै क काम ही लोकविद्या जन-आंदोलन हव।

**लोकविद्या जन-आंदोलन ( लो.ज.आ. ) :**

वैसविक आरथिक अउर परयावरनीय संकट त ऊ कुल्हि विचार आ महकमा क खुलासा कई दीहलस जेमे भारी पैमानन पर लोगन के भूखा मारिके अऊर कुदरत क नास कइके गिनती के लोगन क जेबा भरायल। लोकविद्या जन-आंदोलन एही बड़ भारी जनता क ग्यान आंदोलन हव। कहै क मतलब की ऊ कुल्हि जनै क ग्यान आंदोलन हव, जेकरा के पूंजी क परतिष्ठान, विसविद्यालय अऊर राज्य क व्यवस्था मिलिके अग्यानी आ मुरुख घोषित कइले हउअन। ढेर लोगन इहै मानेलन की विसविद्यालय के बहरवैं ग्यान क सागर हऊअै। समाज में ग्यान क भारी विसतार फइलल बा, ई बात के मानै वालन क कउनो कमी नाहीं हव। कहै क मतलब की लोगन के लग्गे ग्यान हव अउर ओही ग्यान के लोग महसूसो करेलन। तब्बौ उनकरें ग्यान क अउर एही ग्यान के मालिकन क समाज में कउनो आदर-इज्जत नाही बा। उनहन लोगन आपन ई ग्यान के बल पर बढ़िया कमाई नाहीं कइ सकत हउअन, एही से गरीब हउअन। सभकरे दुनिया के बीच में

ऊ लोगन के ग्यान क इज्जत नाहीं हव, एही से उनकर मूल्य अउर संसकिरिति हासिया पर पड़लै रह गयल। उनहन लोगन के ग्यान क जन-संगठनन के संगे कउनो सीधा संबंध नाहीं हव, एही कारन हव की उनकर कउनो राजनीतिक मान नाहीं हव। यकठे अइसन राजनीतिक आंदोलन क जरूरत हव जेमें लोगन आपन ग्यान के आधार पर गती पैदा करेलन। लोकविद्या जन आंदोलन अइसनय यकठे आंदोलन हव। परस्तावित अंतरराष्ट्रीय अधिवेसन किसानन, कारीगरन, आदिवासियन, छोट-छोट धंधा करै वालन, नारी लोगन, अउर नवजवानन के आंदोलन क एक ग्यान क मंच पर जुटावै क परयास हव। ई उन सबही लोगन क ग्यान क मंच हउअै, लोकविद्या क मंच हउअै। अइसनहीं मंच से ई दावा कइल जा सकेला की लोकविद्या में ई कुल क हल मौजूद बाटै।

**दुनिया में हो रहल बा अऊर ग्यान आंदोलन :**

दुनिया में केतनी जगह नवा किसिम क आंदोलन चल रहल बा। अइसन आंदोलन जौने मा येक बहुतै नवा राजनीतिक सोच देखात बा अऊर जेकरा के लोकविद्या जन आंदोलन कहल जा सकेला। भारत में लोकविद्या क अभियान, बोलिविया से शुरू भइल, 'धरती माई क अधिकार' क आंदोलन, इक्वाडोर में 'परकिरिती क अधिकार' क विचार, वाया कम्पेसिना नांव क अंतरराष्ट्रीय किसान संगठन क 'खाद्य सम्परभुता' क विचार आ अभियान अउर यूरोप आ अमरीका क विद्यारथी आंदोलन में अकार ले रहल 'ग्यान क पूंजीवाद' अउर 'ग्यान मुक्ती' क विचार येक नवा राजनीतिक बहस के जनम दे रहल बा। ई कुल में ई आगरह हव की लोगन के लग्गे त ग्यान होबै करैला अउर लोकविद्या साइंस के नांवें पर फैलावल ग्यान से कउनो माने में कमतर नाहीं बा। एकरे पीछे समुझ ई हव की पछिली सदिअन में जनता पर अउर परकिरिती पर जवन कहर बरपावल गयल हव अउर जवन इ सूचना जुग के नवा सामराज मा केतनी गुना बाढ़ल हव, ओकरे के ऊहै लोगन ठीक कई सकेलन जवन लोगन आजु कल्हि क ग्यान (आधुनिक ज्ञान) क व्यवस्थावन में समइले से बच गइल बाटन।

लोकविद्या जन-आंदोलन ई दावा पेस करत हव की सगरों दुनिया में होइ रहल अइसन ग्यान आंदोलन, संघरष क येक नवा विरादराना जमात बना रहल हउअन अउर कुल्हि लोगन क येक संसार भर में फैलल ग्यान आंदोलन ठाढ़ करै चाहत हउअन।

**कारकरम :** तीन दिना होवे वाले ई अधिवेसन क पहिला दू दिन नीचे लिखल विषयन पर बात-बीचार होई—

* लोकविद्या अऊर लोकविद्या जन-आंदोलन क बीचार।
* संघरष जवन ई बीचारन के उकसावेलन अउर उनके बदे जगह बनावेलन।
* लोकविद्या जन-आंदोलन क संगठन अउर आगे भविष क बीचार।

14 नवम्बर के दिन लोकविद्या जन-आंदोलन में भासा, कला, सनचार माध्यम अउर दरसन क भूमिका पर बात-बीचार होई। ऊ लोगन जवन लोकविद्या बीचार से काम नाहीं करतन उनहनों लोगन के ग्यान आंदोलन पर आपन बीचार रखै बदे समय मिली।

अधिवेसन होखे वाले समय में आइल कुल्हि भागीदार लोगन के रहै-खाये क इन्तजाम विद्या आश्रम के ओरी से तय बा। जात्रा क खरच भागीदार लोगन के अपनहीं उठावै के होई।

जुलाई-अगस्त के महीना में अधिवेसन के तैयारी खातिर इंटरनेट पर बहस चलावल जाई। जे लोगन क रुची ई विषय में होवे अउर ऊ लोगन एमें सामिल होवे क चाह रखत होवें त ऊ लोगन हमरा के खबर करैं। ब्लाग http://lokavidyajanandolan.blogpot.com पर ओइसहूं बीचार-भाव का आदान-परदान होतै रही। इ ब्लाग जरूर से आप लोगन देखीं। कुल्हि जानकारी चाहअ बदे नीचे लीखले क उपयोग करीं।

* वेबसाइट : www.vidyaashram.org
* ब्लॉग : http://lokavidyajanandolan.blogpot.com
* ई-मेल : vidyaashram@gmail.com

नीचहूं लिखल लोगन से बातचीत कइल जा सकेला।

| | | |
|---|---|---|
| 1. सुनील सहस्रबुद्धे, वाराणसी, उत्तर प्रदेश | budhey@gmail.com | 09839275124 |
| 2. बी. कृष्णराजुलु, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश | kkbandi@gmail.com | 09866139091 |
| 3. अमित बसोले, बास्टन, अमेरिका | abasole@gmail.com | +1-6176867437 |
| 4. प्रेमलता सिंह, वाराणसी, उत्तर प्रदेश | | 09369124998 |
| 5. लक्ष्मण प्रसाद, वाराणसी, उत्तर प्रदेश | | 09026219913 |
| 6. दिलीप कुमार 'दिली', वाराणसी, उत्तर प्रदेश | | 09452824380 |
| 7. संतोष कुमार संविज्ञ, वाराणसी, उत्तर प्रदेश | | 09452413811 |
| 8. रवि शेखर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश | ravithelight@gmail.com | 09369444528 |
| 9. अवधेश द्विवेदी, सिंगरौली, मध्य प्रदेश | awadhesh.sls@gmail.com | 09425013524 |
| 10. संजीव कीर्तने, इंदौर, मध्य प्रदेश | sanjeev.kirtane48@gmail.com | 09926426858 |
| 11. गिरीश सहस्रबुद्धे, नागपुर, महाराष्ट्र | irigleen@gmail.com | 09422559348 |
| 12. दिलीप दूबे, देवघर, झारखंड | pravah001@sify.com | 09431132568 |
| 13. अजय, वैशाली, बिहार | | 09955772332 |

चित्रा सहस्रबुद्धे
समन्वयक, विद्या आश्रम
ई-मेल : vidyaashram@gmail.com
मो. : 09838944822